वासीली
सुखोम्लीन्स्की
गाता जाये नन्हा
पंख

वासीली सुखोम्लीन्स्की

गाता जाये नन्हा पंख

रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस(प्रा)लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

मेरे पास भी एक शब्द है

कातेरीना इवानोव्ना पहली कक्षा के बच्चों को अपने साथ खेत में ले गयीं। शरद की शान्त सुबह थी। दूर आकाश में प्रवासी पक्षियों का झुण्ड कतार बांधे उड़ा जा रहा था। उनके धीमे कलरव में विदा की गूंज थी इसीलिये खेतों और स्तेपी में भी उदासी छायी थी।

कातेरीना इवानोव्ना ने बच्चों से कहा :

"आज हम लोग शरद के आकाश और प्रवासी पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। तुम में से हरेक यह बतायेगा कि इस समय आकाश कैसा है। बच्चो, ज़रा ध्यान से देखो। सुन्दर और सही शब्द चुनकर जवाब दो।"

बच्चे शान्त हो गये। वे आकाश को देखते हुए सोचने लगे। एक मिनट बाद ही नन्हे-नन्हे उत्तर मिलने शुरू हो गये।

"आकाश नीला है..."

"आकाश आसमानी है..."

"आकाश स्वच्छ है..."

"आकाश नीला-हरा है..."

और बस। बच्चे बार-बार ये ही शब्द दुहराते जा रहे थे: नीला, आसमानी, नीला-हरा, स्वच्छ...

नीली आंखोंवाली वाल्या एक तरफ़ चुपचाप खड़ी थी।

"और तुम क्यों चुप हो, वाल्या?"

"आकाश स्नेहमय है..." वाल्या ने धीरे से कहा और उदास मुस्करा दी।

बच्चे चुप हो गये। अब वे ऐसी बातें देखने लगे, जिन्हें पहले नहीं देख पा रहे थे।

"आकाश उदास है..."

"आकाश चिन्तित है..."

"आकाश दुखी है..."

"आकाश को ठण्ड लग रही है..."

उनके सामने आकाश खेल रहा था, सुगबुगा रहा था, सांस ले रहा था, मानो वह सजीव हो। और बच्चे उसकी उदास, नीली-नीली, शारदीय आंखों को देख रहे थे।

मैं बादलों के गरजने से नहीं डरता

जून का तपता हुआ दिन था। उस दिन पांचवीं कक्षा के विद्यार्थी जंगल घूमने गये।

जंगल सुहाना था। बच्चे वहां देर तक खेलते रहे, मज़ेदार किताब पढ़ते रहे। उन्होंने अलाव पर दलिया भी पकायी।

शाम होते ही जंगल के पार काले-काले बादल घुमड़ने और गरजने लगे। वर्षा से बचने के लिये बच्चे चरवाहों की झोपड़ी की ओर दौड़े। वीत्या भी भागा। लेकिन अचानक बिजली चमकी और बादल ऐसे ज़ोर से गरजा कि वीत्या के होश उड़ गये, वह एक बड़े बलूत वृक्ष के नीचे उकड़ूं बैठ गया। उसने आंखें मूंद लीं और रुआंसा हो गया। उसने मुंह खोला ही था कि ज़ोर से चिल्ला सके, सहायता के लिये पुकार सके, पर निकट ही उसे वाल्या खड़ी दिखायी दी। वह उसकी सहपाठिनी थी।

"वीत्या, तुम? ओह, यह तो बड़ी अच्छी बात है कि मैं अकेली नहीं। अब मुझे डर नहीं लगता।"

वीत्या ने चैन की सांस ली और अपने आसपास देखा। मूसलाधार वर्षा में जंगल डूब गया था। अचानक बिजली चमकी, क्षण भर के लिये वृक्ष और झाड़ियां नीले प्रकाश से जगमगा उठे। जंगल चीख रहा था, कराह रहा था। नन्हे वीत्या को लगा कि अब दुनिया में उसके और वाल्या के सिवा कोई नहीं है। उसे डरना नहीं चाहिये, यह तो शर्म की बात है। ख़ासकर साथ में जब एक लड़की हो और उसकी ज़िम्मेदारी खुद उस पर ही हो।

"डरो मत, वाल्या," वीत्या ने कहा, "मैं गरजते बादलों या कड़कती बिजली से नहीं डरता।"

वीत्या ने उसकी सुनहरी चोटी को धीरे से छू लिया। अब उसका भय दूर हो चुका था।

पेत्रिक रोया क्यों?

नन्हे पेत्रिक को घर में छोड़कर मां पावरोटी खरीदने दुकान चली गयी।

मां के जाते ही पेत्रिक खुली खिड़की की ओर आया।

खिड़की के दासे पर एक फूलदान रखा था।

अचानक उसने देखा कि एक बड़ी-सी रंग-बिरंगी तितली फूलदान की कोर पर आकर बैठ गयी है। पेत्रिक का जी ललचाया। वह तितली को पकड़ना चाहता था। उसने खिड़की के दासे पर कोहनी टिकायी और हाथ बढ़ाया ही था कि फूलदान को धक्का लगा। वह गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गया।

पेत्रिक बुरी तरह डर गया। अब क्या होगा? मां क्या कहेगी?

उसने फूलदान के टुकड़ों को इकट्ठा किया, उन्हें बग़ीचे में ले गया और एक नन्ही कुदाली से ज़मीन खोदकर गाड़ दिया। और अब खिड़की के पास बैठकर मां का इन्तज़ार करने लगा।

मां अभी घर में पहुंची ही थी कि पेत्रिक दौड़कर उसके पास आया और बोला:

"मां, फूलदान मैंने नहीं तोड़ा... न उसके टुकड़े ही उठाकर बग़ीचे में ले गया ... न मैंने ज़मीन खोदकर उन्हें गाड़ा ही था।"

पेत्रिक ने मां की आंखों में एक छटपटाहट महसूस की।

"तो फिर किसने तोड़ा फूलदान?" मां ने पूछा।

"एक तितली ने..." पेत्रिक ने धीरे से कहा।

मां मुस्करा दी।

"तितली ने फूलदान कैसे तोड़ा यह मैं समझ गयी," उसने कहा। "लेकिन वह टुकड़े लेकर बग़ीचे में कैसे पहुंची और उसने उन्हें ज़मीन के नीचे गाड़ भी दिया?"

पेत्रिक ने मां की ओर देखा और रोने लगा।

अच्छा क्या है?

एक नन्ही लड़की को नये-नये सवाल पूछना पसन्द था।

"मम्मी, अच्छा क्या है," एक दिन उसने अपनी मां से पूछा, "सेब या नाशपाती? गुलाब या ग्लैडिओला? गेंद या गुड़िया?"

मां धैर्य से उत्तर देती थी, लेकिन मन ही मन इस प्रश्न पर हैरान थी: सचमुच यह कैसे कहा जा सकता है कि क्या ज्यादा अच्छा है–गेंद या गुड़िया, गुलाब या ग्लैडिओला?

लेकिन एक दिन उस नन्ही लड़की ने फिर पूछा:

"मम्मी, कहानी अच्छी है या गीत?"

"लो, अब मेरे भी एक प्रश्न का उत्तर दो। ठीक से सोचकर बताओ। सूरज अच्छा है या आकाश? अगर तुम मेरे इस प्रश्न का उत्तर बता दोगी, तो मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दूंगी।"

नन्ही लड़की बड़ी देर तक प्रश्न का उत्तर ढूंढती रही, सोचती रही, पर फ़ैसला न कर पायी। पहले उसने आकाश को देखा, फिर सूरज को। सचमुच यह कह पाना बड़ा कठिन था कि उनमें कौन अच्छा है: सूरज या आकाश! वे दोनों ही बड़े सुन्दर थे। और थे भी अभिन्न संगी।

उस दिन के बाद नन्ही लड़की ने फिर कभी नहीं पूछा कि अच्छा क्या है? अब वह दूसरे तरह के प्रश्न किया करती थी: "कहानियों में अच्छा क्या है? गीतों में अच्छा क्या है?"

और मां ख़ुशी-ख़ुशी उत्तर दिया करती थी।
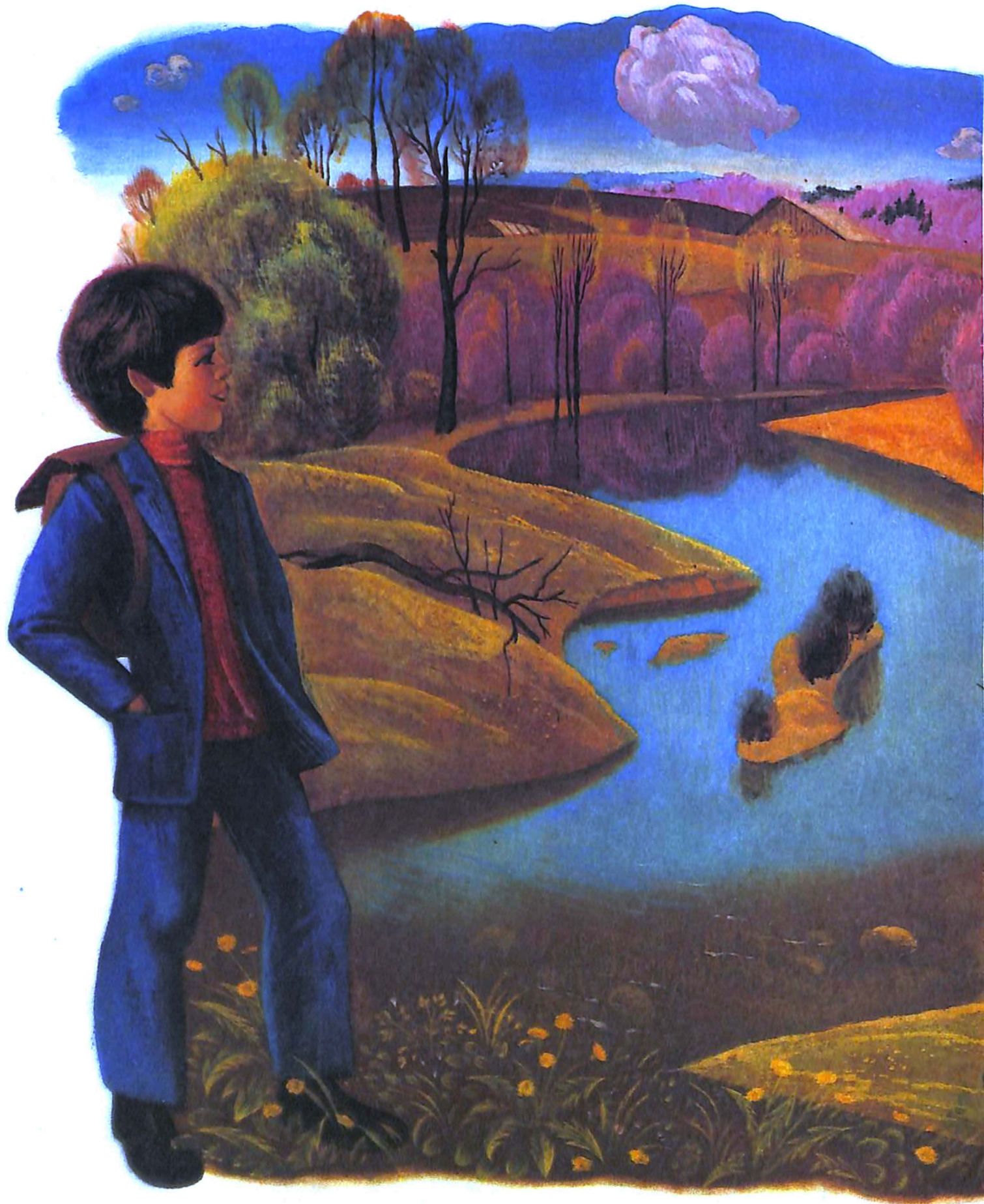
गुलाब या भेड़िये का जबड़ा

सेर्गेई और मिकोला स्कूल से घर लौट रहे थे।

सेर्गेई ख़ुश था। उसने अपनी अध्यापिका को तीन प्रश्नों के सही-सही उत्तर दिये थे। मिले भी उसे पूरे अंक।

लेकिन मिकोला उदास और दुखी था। अध्यापिका ने उसे दो बार श्यामपट पर बुलाया। पर उसने गलत उत्तर दिये, अंक ख़राब मिले। अध्यापिका ने कहा :

"तुम्हारी मां से कहूंगी, उन्हें ख़राब अंकों के बारे में बताऊंगी।"

बसन्त का सुहाना मौसम था। सूरज चमक रहा था। चटक नीले आसमान पर सफ़ेद बादल का एक टुकड़ा तैर रहा था।

सेर्गेई उसे देखकर बोला :

"देखो, मिकोला। कितना सुन्दर है वह। सफ़ेद गुलाब की तरह। वो देखो, पंखुड़ियां खिली हैं, नाज़ुक और महीन। हवा में कंपकंपा रही हैं।"

मिकोला देर तक बादल को देखता रहा। फिर धीरे से बोला:

"कहां रे, मुझे न पंखुड़ियां दिखती हैं, न गुलाब। बादल तो भेड़िये जैसा है। देखो, उस ओर उसका सिर है, खौफ़नाक जबड़े खुले हैं, जैसे अभी टूट पड़ेगा।"

लड़के देर तक बादल को देखते रहे। दोनों उसे अपनी अपनी नज़र से देख रहे थे।
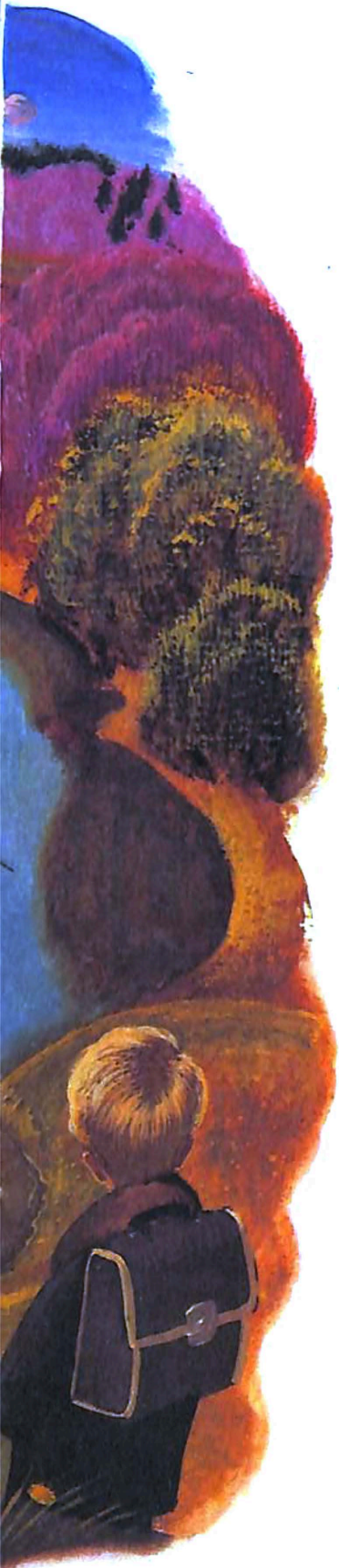
नन्ही फुदकी रोई क्यों ?

गांव के किनारे एक घर में पति-पत्नी रहते थे। उनके दो बच्चे थे—लड़के का नाम था मीशा और लड़की का ओल्या। मीशा दस वर्ष का था और ओल्या नौ की।

घर के पास बहुत-सी शाखाओंवाला एक ऊंचा पोपलर का पेड़ था।

"चलो, पेड़ पर झूला डालें?" मीशा ने कहा।

"अहा, झूलने में ख़ूब मज़ा आयेगा," ओल्या ख़ुशी से उछल पड़ी।

मीशा पोपलर के पेड़ पर चढ़ गया। एक मज़बूत डाल पर रस्सी बांध दी गई और झूला पड़ गया।

मीशा और ओल्या पेंग मारकर झूलने लगे। उनके आसपास एक नन्ही फुदकी उड़ती हुई मंडरा रही थी, ख़ुशी से लगातार कुछ गा रही थी। मीशा ने कहा:

"नन्ही फुदकी ख़ुश है कि हम झूल रहे हैं।"

ओल्या ने वृक्ष के तने को देखा, उसमें एक छोटा-सा कोटर था और कोटर में एक नन्हा-सा घोंसला। और घोंसले में फुदकी के नन्हे-मुन्ने बैठे थे।

"फुदकी ख़ुश नहीं है, वह रो रही है।" ओल्या ने कहा।

"लेकिन किसलिये?" मीशा ने आश्चर्य से पूछा।

"सोचो न, किसलिये?" ओल्या ने प्रश्न का उत्तर प्रश्न से दिया।

मीशा झूले से कूद पड़ा, उसने फुदकी के घोंसले को देखा और सोचने लगा कि आख़िर नन्ही फुदकी रो क्यों रही है?

अमर वृक्ष

सड़क के किनारे एक बहुत-बहुत पुराना पोपलर का वृक्ष था। जाड़े के मौसम में उसकी पत्रविहीन शाखायें बेचैनी से शोर मचातीं, लेकिन बसन्त आते ही यह वृक्ष फिर हरा-भरा हो जाता था। जब से मैंने होश संभाला है, यह वृक्ष हमेशा एक प्रहरी-सा खड़ा रहा है। मैं मां से पूछता हूं:

"कितना पुराना है हमारा पोपलर? किसने उसे रोपा था?"

"नहीं मालूम। पर जहां तक मुझे याद है, इसे बस इसी तरह देखती आ रही हूं।" मां ने जवाब दिया।

मैं दादा जी से पूछता हूं:

"कितना पुराना है हमारा पोपलर? उसे किसने रोपा था?"

"याद नहीं," दादा जी ने कहा। "इसे हमेशा ऐसे ही देखता आया हूं। खुद हरा-भरा है और सबको खुशियां बांटता है। किसी भले आदमी ने ही इसे रोपा होगा। मुझे याद है, बचपन में मैं इसके नीचे खेला करता था, और तुम्हारी मां अपनी सहेलियों के साथ यहीं बैठ-कर बुनाई किया करती थी और अब तुम भी इसकी छाया में खेलते हो।"
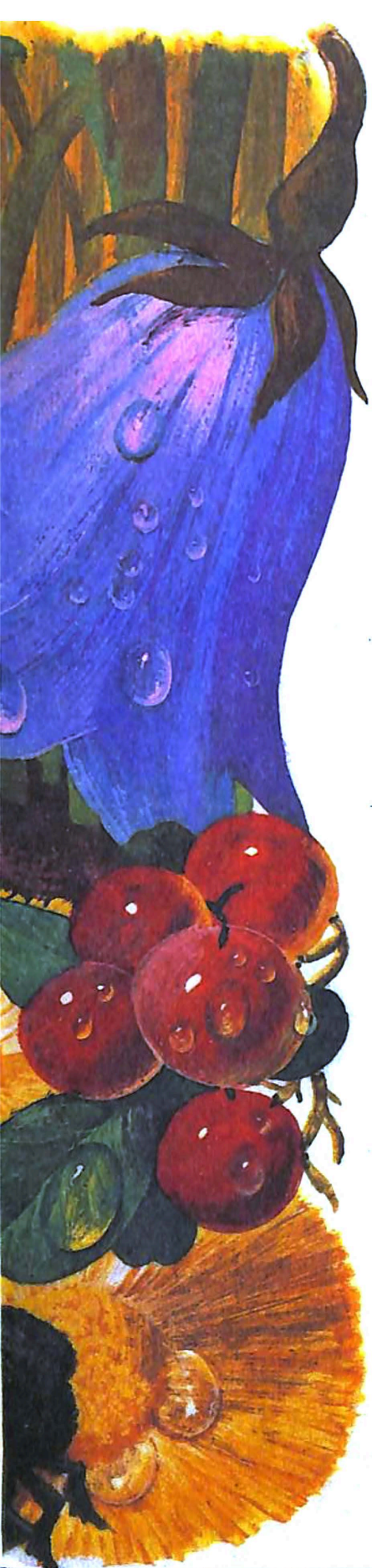
चींटी का मनोबल

एक नन्ही काली चींटी दौड़ती जा रही थी। घर पहुंचने की जल्दी थी उसे। वह अपने बच्चों के लिये ख़शख़ाश का एक दाना लिये जा रही थी। अचानक उसने देखा कि रास्ते में कद्दू का एक बीज पड़ा है: बड़ा, मीठा और ख़ुशबूदार। चतुर चींटी ने ख़शख़ाश का दाना वहीं एक किनारे छोड़ दिया। अब उसने कद्दू का बीज अपनी पीठ पर लादा, पर उसका बोझ संभाल न सकी। बीज गिर पड़ा। चींटी ने उसे फिर लादा। लेकिन इस बार भी वह गिर गया। इस तरह उसने कद्दू के बीज को कई बार उठाया और लादा। लेकिन वह बार-बार गिर जाता था।

अचानक चींटी को लगा कि कोई धीरे-धीरे हंस रहा है।

उसने मुड़कर देखा, सड़क के किनारे एक व्याध-पतंग बैठा था।

"चींटी रानी, तुमने इस बीज को हज़ार बार उठाया," व्याध-पतंग ने कहा, "तो क्या तुम थकीं नहीं? ऐसे कोई लाभ नहीं होगा, छोड़ दो उसे। जैसे पड़ा था, पड़ा रहने दो।"

तब चींटी बोली:

"लाभ तो उसे नहीं होता, जो असफलता से घबड़ाता है।"

चींटी ने फिर बीज उठाया, पीठ पर लादा और घर की ओर चल दी। और अब बीज रास्ते में कहीं न गिरा।

ऐसा था उस नन्ही चींटी का मनोबल।

सबसे सुन्दर है मेरी मां

उलूका का एक नन्हा बेटा था। भारी डीलडौल, भूरे डैने, गोल-गोल आंखें और चौड़ा मुंह—ऐसा ही था उलूक-सुत।

उलूक या उल्लू सिर्फ़ रात में ही उड़ते हैं। वे सूरज की तेज़ रोशनी से डरते हैं। एक दिन उलूका ने अपने अबोध बेटे को यह नसीहत दी :

"देखो, दिन में अपने कोटर से बाहर मत निकलना। सूरज तुम्हें अन्धा कर देगा। और तब तुम अपना घर खोज न पाओगे।"

लेकिन नन्हे उलूक ने मां की बात नहीं मानी। वह घोंसले से बाहर निकला, आंखें मूंदीं और चरागाह के पार उड़ गया। वहां उसने अपनी आंखें खोलीं, सूरज की ओर देखा और तुरन्त अन्धा हो गया। अब वह घास में बैठा धीरे-धीरे रो रहा था। इसी समय एक बगुला उसके पास आ पहुंचा :

"क्यों रे, तू किसका बेटा है?" उसने पूछा।

"मैं नन्हा उलूक हूं," उसने दुखी स्वर में कहा। "मेरी मां उलूका है। मैं कुछ देख नहीं सकता। कृपया मुझे मेरी मां के पास पहुंचा दीजिये।"

"लेकिन उसे मैं पहचानूंगा कैसे?" बगुले ने पूछा।

"मेरी मां दुनिया की सबसे सुन्दर मां है। उसकी आंखें दयालु हैं, सौम्य और मोहक हैं। वैसी आंखें किसी और की नहीं हैं, सिर्फ़ मेरी मां की हैं।"
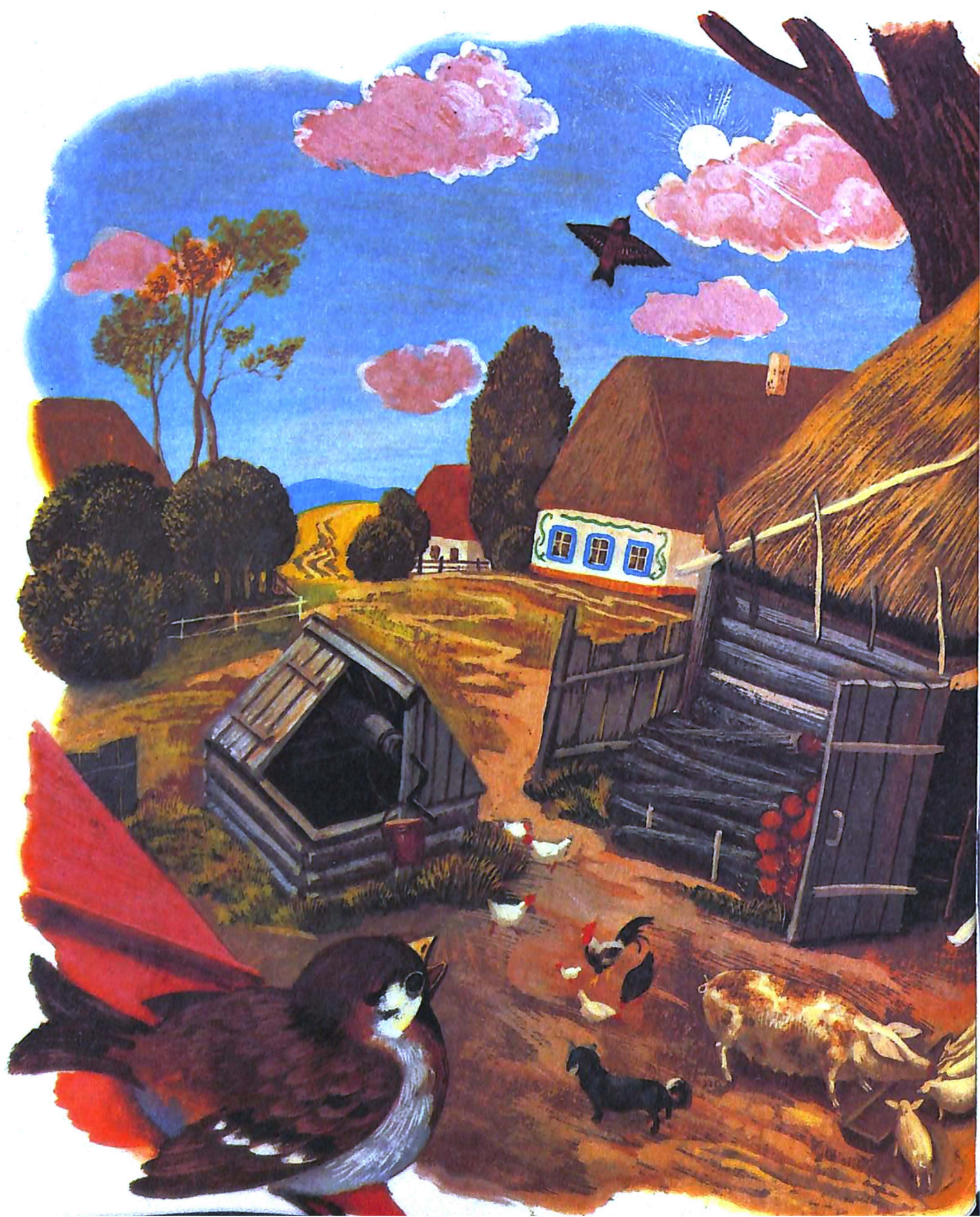
नन्हा चिरौंटा और आग

आख़िर बूढ़ी गौरैया ने बेटे को घोंसले के बाहर निकलने और उड़ने की आज्ञा दे दी। नन्हा चिरौंटा फुदक-फुदककर मां से पूछता जाता था:

"यह क्या है? और वह क्या है?"

मां ने उसे घास, वृक्ष, मुर्गियां, कलहंस और तालाब के बारे में समझाकर बताया।

नन्हे चिरौंटे की दृष्टि आकाश में दहकते हुए एक आग के गोले पर पड़ी। उसने फिर पूछा:

"और वो क्या है, मम्मी?"

"बेटा, वह सूरज है," मां ने कहा।

"यह सूरज क्या होता है, मम्मी?" नन्हा चिरौंटा शान्त न हुआ।

"क्या करेगा उसे जानकर?" अक्लमन्द गौरैया ने बड़बड़ाते हुए कहा। फिर नन्हे को समझाकर बोली: "सूरज माने आग, वह आग है।"

"लेकिन यह आग क्या है?" नन्हा चिरौंटा चहका और उड़ चला दहकते सूरज की ओर। ऊपर और ऊपर, देर तक उड़ता रहा।

वह लगातार उड़ान भरता रहा, जब तक कि उसके डैने के मुलायम नन्हे रोयें झुलसने न लगे। अब भयभीत चिरौंटा लौट पड़ा। उसकी मां की तो जैसे जान ही निकल गई थी। वह पल-पल बेटे का इन्तज़ार कर रही थी।

"हां, अब मैं जानता हूं कि आग क्या है!" नन्हे चिरौंटे ने मां से चहककर कहा।

आलसी और सूरज

गर्मी का झुलसता हुआ दिन था। एक आलसी जंगल घूमने निकला। वह जंगल में घूमता-घामता एक खुले मैदान में पहुंचा और जगह छायादार देखकर आराम करने लगा। घास नरम-नरम थी, जल्द ही आलसी को नींद आ गई।

इधर आलसी खर्राटे लेता रहा, उधर सूरज का गोला आकाश में सबसे ऊपर पहुंच गया। सूरज की किरणों से मैदान आलोकित था; पर आलसी को महसूस हुआ कि किरणें उसके सिर और पैर को गरमा रही हैं। आलसी अपनी जगह से उठा होता, ठण्डी घास पर छाया की ओर बढ़ गया होता, पर था तो वह पक्का आलसी। आख़िर इतनी तकलीफ़ क्यों उठाता? इसलिये वह सूरज से कहने लगा:

"सूरज प्यारे, मेहरबानी करो, ज़रा किनारे खिसक जाओ। मुझे गर्मी लग रही है।"

सूरज ने ज़ोरदार ठहाका लगाया:

"क्या संभव है कि आलसी की इच्छा पर सूरज खिसक जाये?"

आलसी को ग़ुस्सा आ गया। वह ज़ोर से चिल्लाकर बोला:

"तो तू खिसकना नहीं चाहता?"

"कतई नहीं," सूरज ने उत्तर दिया।

"अगर ऐसा है," आलसी ने कहा, "तो मैं भी यहीं लेटा रहूंगा।"

गाता जाए, नन्हा पंख

एक अनोखी चिड़िया है चाहा! वह गाती है... तुम सोचते होगे, बच्चो, कैसे गाती होगी? लेकिन वह ख़ुद नहीं गाती, उसका पंख गाता है। चिड़िया के डैनों में एक ख़ास तरह का नन्हा गायक पंख होता है। उड़ते वक़्त, जब चाहा का मन गाने का होता है, वह अपने डैने इस तरह फैलाती है कि उसका गायक पंख आगे निकल आता है, गाने के लिए तैयार हो जाता है। और तब उस गानेवाले पंख से एक मधुर स्वर गूंजने लगता है। वह सारंगी की आवाज़-सा महीन होता है, जैसे गज़ फिराकर उसे बजाया जा रहा हो और उसकी गूंज बांसुरी जैसी होती है, जब हवा पतले सरकण्डे की दरार से बहती है।

एक दिन चाहा को बड़ा दुख हुआ। उसका गानेवाला पंख खो गया, उड़ते वक़्त ज़मीन पर कहीं गिर गया। चाहा ने गाना चाहा, पर गानेवाला पंख तो था ही नहीं।

चाहा का पंख नन्हे सेर्गेई ने पाया। उसने पंख को उठा लिया और दौड़ पड़ा। पंख गाने लगा। चाहा ने अपने पंख का गीत सुना, तो उड़कर लड़के के पास आई और विनती करने लगी:

"प्यारे भैया, मेरा गानेवाला पंख मुझे दे दो। मैं गीत के बिना जी नहीं सकती।"

सेर्गेई को आश्चर्य हुआ, उसने चिड़िया को गानेवाला पंख लौटा दिया।

नन्हा सेर्गेई बड़ा हुआ, उसने लम्बी उम्र पाई। लेकिन चाहा चिड़िया को न भूल पाया। उसने अनेक बार चाहा की याद करते हुए सोचा: "हर आदमी के पास उसका एक गानेवाला पंख होता है। अभागा वह है, जिसके पास यह सुन्दर पंख नहीं होता।"

अनुवादक : संगमलाल मालवीय

चित्रकार : वसीली शुलजेन्को

В. Сухомлинский
ПОЮЩЕЕ ПЕРЫШКО
На языке хинди

Vasily Sukhomlinsky
THE SINGING FEATHER
In Hindi

ISBN 5-05-002337-8